P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-6* February- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

उत्तर प्रदेश के सरयूपार मैदान के तराई में जनसंख्या वितरण एवं घनत्व

प्रभात कुमार तिवारी
शोध छात्र,
भूगोल विभाग,
बुद्ध स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
कुशीनगर, उ.प्र., भारत

कौस्तुभ नारायण मिश्र
असोसिएट प्रोफेसर,
भूगोल विभाग,
बुद्ध स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
कुशीनगर, उ.प्र., भारत

सारांश

वर्तमान समय में भारत की जनसंख्या 1.3 अरब है। भारत में अधिकांश प्रदेशों की जनसंख्या तो विश्व के अनेक देशों की जनसंख्या से अधिक है। उत्तर–प्रदेश में 16 करोड़ से अधिक लोग निवास करते हैं जो रूस की जनसंख्या 15 करोड़ से अधिक है। इसी प्रकार उड़ीसा कनाडा से, छत्तीसगढ़ आस्ट्रेलिया से अधिक जनसंख्या वाले प्रदेश हैं। किसी भी देश में मनुष्यों की संख्या ही मानव संसाधन है। संसाधन के रूप में मनुष्य का आकलन उसकी कार्यक्षमता, दक्षता, कार्यरत व्यक्तियों की संख्या, उनकी साक्षरता का स्तर, उनके पोषण का स्तर, सामाजिक सुरक्षा का स्तर, प्रति व्यक्ति आय, जनसंख्या के विभिन्न आयुवर्ग के अंतर्गत आने वाली जनसंख्या आदि से किया जाता है। जन साधारण में संसाधन शब्द से सामान्यतया मूर्त या गोचरपदार्थों का ही अर्थ लगाया जाता है। वास्तव में गोचर वस्तुएँ या पदार्थ (खनिज पदार्थ, जल भूमि, मिट्टी आदि) संसाधन है और उनकी संसाधनता में रंच मात्र का संदेह भी नहीं है। लेकिन मानव का स्वास्थ्य, इच्छा, ज्ञान, सामाजिक सामंजस्य, आर्थिक समुन्नति, राजनैतिक स्थिरता, वैज्ञानिक अभिरूचि, राष्ट्रीय गठन, प्राविधिकी, अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग आदि अर्मूत तत्व ही मानव जगत के महत्वपूर्ण संसाधन हैं। इसके साथ ही पूँजी, बाजार, परिवहन के साधन, अनुकूल समाजिक आर्थिक–राजनैतिक परिवेश एवं नीतियाँ भी संसाधन की कोटि में आती हैं, क्योंकि इनसे वस्तुओं के उत्पादन एवं उपयोग में सहायता प्राप्त होती है। इस प्रक्रिया से प्रतिभूत परिवर्तन मानव–संस्कृति को जन्म देते हैं, क्योंकि मानव संस्कृति एक ओर मानव के ज्ञान तथा दूसरी ओर प्राकृतिक वातावरण के अन्तर्सम्बन्धों का प्रतिफल होती है। मानवीय भू–दृश्य वस्तुतः मानव की उस परिवर्तनकारी एवं विकृतकारी सांस्कृतिक क्षमता का प्रतिफल है, जिसके द्वारा प्राकृतिक वातावरण को अब तक विद्यमान अथवा सम्भाव्य संसाधनों का आधार मानकर स्वार्थ–सिद्धि के लिए शोषण करता आया है। अतः संस्कृति स्वतः मानव के लिए सर्वाधिक प्रभावशाली संसाधन है और अन्य संसाधनों की तालिका भी हर देश काल समाज में सांस्कृतिक बोध एवं क्षमता के अनुसार घटती एवं बढ़ती रहती है। 'उत्तर प्रदेश के सरयूपार मैदान के तराई में जनसंख्या वितरण एवं घनत्व' के सन्दर्भ में क्रमवद्ध एवं प्रादेशिक विधि तथा प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ों की सहायता से जनसंख्या वितरण एवं घनत्व का मूल्यांकन किया जायेगा।

मुख्य शब्द : घनत्व, वितरण, जनसंख्या प्रतिरूप, जनसंख्या प्रव्रजन, आव्रजन, दुष्चक्र, विकास, आर्थिक विकास, तराई, आर्द्र, जनसंख्या भार, जनाधिक्य क्षेत्र, औसत जनांकिकीय क्षेत्र, जनांकिकीय।

प्रस्तावना

भारत की जनसंख्या में ''संख्या–तत्व'' सर्वप्रधान होता जा रहा है, जबकि ''जन–तत्व'' अर्थात गुणवत्ता सम्पन्न मानव का ह्रास हो रहा हैं। मानवीय गुणवत्ता की दृष्टि से भारत की दशा अत्यन्त ही दयनीय हैं। यू0एन0डी0पी0 द्वारा प्रकाशित मानव विकास प्रतिवेदन–1993 के अनुसार 173देशों के लिए निर्मित मानव विकास निर्देशांक में भारत का 134वां स्थान था, वहीं 2014 में 188 देशों की सूची में भारत का स्थान 135वां तथा 2015–16 में 130वां रहा, जबकि जुलाई 2001 में प्रस्तुत ''मेकिंग न्यू–टेक्नीक्स वर्क्स फॉर ह्यूमन डेवलेपमेन्ट'' शीर्षक वाली मानव विकास रिपोर्ट में कुल 162 देशों का सर्वेक्षण किया गया, जिसमें भारत का 115वां स्थान रहा। इस रिपोर्ट में वास्तविक क्रय क्षमता, शिक्षा तथा स्वास्थ्य के स्तरों का समावेश किया गया है। वास्तव में क्रय क्षमता, लोगों की आय, जो रोजगार के अवसर पर निर्भर है, का मापदण्ड है तो शिक्षा मानसिक विकास के स्तर पर, और स्वास्थ्य शारीरिक विकास के मापदण्ड पर निर्भर करता

है। इन मानदण्डो का समुच्चयिक मान अधिकतम '1' हो सकता है, जबकि न्यूनतम मान '0' हो सकता है। भारत का न्यून निर्देशांक इतना चिन्तनीय नहीं है, जितना भारत के अन्तर्गत मानव विकास की दशा व स्तर में क्षेत्रीय विभिन्नता। यदि उत्तर प्रदेश की बात करें तो स्पष्ट होगा कि उत्तर प्रदेश का मानव विकास स्तर राष्ट्रीय मानव विकास स्तर का मात्र एक तिहाई है अर्थात यह सूचकांक मात्र 0.1 है। यदि इस सूचकांक को जीवन–शैली की स्वतंत्रता एवं अवसरों का विस्तार मानें तो उत्तर प्रदेश में निश्चय ही ऐसे अवसर व उत्तम जीवन शैली की सुलभता नहीं है। उत्तर प्रदेश का एक बड़ा जनसमुदाय ग्रामीण है, जो अभाव का जीवन जीने हेतु विवस है। इस दरिद्रता दुष्चक्र में विकास की दौड़ में पीछे छूटे लोग गरीबी, शारीरिक दुर्बलता, शक्तिहीनता आदि के जाल में उलझे हुए हैं। इन सारी परिस्थितियों का एकमात्र जननी अनियंत्रित रूप से निरन्तर बढ़ती जा रही है। भारत के ठण्डे राज्यों में जनसंख्या की समस्या एक विनाशकारी समस्या के रूप में उभर रही है।

जनसंख्या वितरण में जनसंख्या के यथार्थ स्थल स्थिति प्रारूप पर ध्यान दिया जाता है। मानव के इस विस्तार या फैलाव के आधार पर रेखीय या प्रकीर्ण जनसंख्या प्रतिरूप उत्पन्न होता है, जबकि जनसंख्या घनत्व का तात्पर्य जनसंख्या एवं धरातल के अनुपात से है। यह जनसंख्या जमाव की मात्रा का मापन है। इसे प्रति इकाई क्षेत्र पर व्यक्तियों की संख्या के रूप में व्यक्त किया जाता है। यह भूमि के प्रति इकाई क्षेत्र पर पड़ने वाले मानव के भार का मापन है। इसके आधार पर किसी भी क्षेत्र को जनसंख्या अतिरेक, आदर्शतम जनसंख्या व अल्प जनसंख्या क्षेत्रों में विभाजित किया जा सकता है। स्पष्ट है बिना जनसंख्या घनत्व के जनसंख्या के वितरण सम्बन्धी अध्ययन अपूर्ण है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध–प्रपत्र 'उत्तर प्रदेश के सरयूपार मैदान के तराई में जनसंख्या वितरण एवं घनत्व के अध्ययन शोध में जनसंख्या वितरण प्रतिरूप एवं घनत्व के कारण के सन्दर्भ में गत्यात्मकता का आकलन करना। जनसंख्या वितरण एवं घनत्व प्रतिरूप का स्थानिक व कालिक विश्लेषण करना। जनसंख्या के स्थानान्तरण का स्थानिक कालिक विवेचना आव्रजन एवं प्रव्रजन के सन्दर्भ में करना। जनसंख्या गत्यात्मकता के कारकों का क्षेत्र के सामाजिक–आर्थिक जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव एवं उसके प्रभाव का अध्ययन करना। मानव जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित करने में जनसंख्या संसाधन आधार की महत्वपूर्ण भूमिका है। प्रस्तुत अध्ययन मे जनसंख्या घनत्व एवं वितरण के सन्दर्भ में सरयूपार मैदान में जनसंख्या की दशा एवं दिशा एवं उसके भविष्यगामी विकास स्तर एवं स्थिति का आंकलन करना प्रमुख उद्देश्य है।

विधि तन्त्र एवं उपागम

प्राथमिक ऑकड़ों के अध्ययन द्वारा संकलित किया जायेगा, जिसमें साक्षात्कार विधि द्वारा सामाजिक आर्थिक व्यवस्था की जानकारी प्राप्त की जायेगी। द्वितीयक ऑकड़ों के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार की पत्र–पत्रिकाएं, प्रकाशित एवं अप्रकाशित शोध प्रबन्धों का अध्ययन किया जायेगा, भारत सरकार एवं उत्तर प्रदेश द्वारा संचालित विभागों के द्वारा प्रकाशित जनगणना पुस्तिका, जनपद गजेटियर, जनपद सांख्यिकी पत्रिका द्वारा ऑकड़ों का संकलन एवं मानचितत्र उपागम का भी प्रयोग किया जायेगा। जनसंख्या की गतिशीलता के विविध पक्षों पर प्रकाश डालने हेतु विभिन्न वर्षो के जनांकिकीय के ऑकड़ों का प्रयोग किया जायेगा। प्रस्तुत अध्ययन में क्षेत्र की सम्पूर्ण जनसंख्या की विशेषताओं को कालिक परिवर्तनों एवं क्षेत्रीय स्वरूपों में स्पष्ट करने के लिए क्रमबद्ध उपागम को अपनाया जायेगा। सम्पूर्ण क्षेत्र को भौतिक विभागों में बॉटकर जनपद स्तर पर जनसंख्या की विशेषताओं का अध्ययन किया जायेगा। व्यक्तिगत सर्वेक्षण के माध्यम से प्राप्त आंकड़ों का प्रयोग किया जायेगा।

परिकल्पनाएँ

1. जनसंख्या की गत्यात्मकता में स्थानिक एवं कालिक विषमता पायी जाती है ।
2. जनसंख्या गत्यात्मकता अनेक सामाजिक–आर्थिक कारकों से प्रभावित होती है तथा जनसंख्या गत्यात्मकता सामाजिक–आर्थिक जीवन को भी प्रभावित करती हैं।
3. जनसंख्या गत्यात्मकता से जनसंख्या की संरचना प्रभावित होती है।

अध्ययन क्षेत्र

अध्ययन के लिए सरयूपार मैदान (उत्तर प्रदेश) तराई क्षेत्र का चयन किया गया हैं। भावर प्रदेश से सटे ही दक्षिण में तराई क्षेत्र का विस्तार है। यह तराई क्षेत्र उत्तरी मध्य भारत के सुदूर उत्तरी भाग से लेकर नेपाल के दक्षिणी भाग में पूर्व से पश्चिम तक एक पतली पट्टी के रूप में विस्तृत है। तराई का नामकरण हिमालय के दक्षिणस्थ पाद प्रदेश के समीपवर्ती क्षेत्रों में गोलाश्म, बजरी आदि अवसादों का ऐसा निक्षेप है, जहॉ नदियों का जल स्वतः ही लुप्त हो जाता है। इसका प्रमुख कारण निक्षेपित कणों का रन्ध्रयुक्त होना है। इस क्षेत्र को भावर प्रदेश की संज्ञा दी गई है। प्रकृति ने यहाँ इस प्रकार भूसतह का निर्माण किया है, जहाँ सतही जल बड़ी सरलता से भूमिगत हो जाता है। इसी भावर प्रदेश से सटे दक्षिण भाग में तराई क्षेत्र का विस्तार है। इस तराई क्षेत्र को विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न नामों से भी पुकारा जाता है–यथा–नेपाल में इसे 'तरायनी' के नाम से जबकि अनेक स्थानों पर इसे मोरंग नाम से सम्बोधित किया जाता है। भारत नेपाल का यह तराई क्षेत्र एक विशिष्ट भौगोलिक एवं सांस्कृतिक प्रदेश है। सरयूपार तराई क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति $26^0 55''$ उत्तर से $28^0 19''$ उत्तरी अक्षांश एवं $81^0 4''$ से $84^0 2''$ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। यह मैदान एक पतली पेटी के रूप में उत्तर–पश्चिम से दक्षिण पूर्व विस्तृत है, जिसका सम्पूर्ण क्षेत्रफल 8984 वर्ग किलोमीटर है। जिसमें बहराइच जनपद का क्षेत्रफल 822 वर्ग किमी0, श्रावस्ती जनपद का क्षेत्रफल 1064 वर्ग किमी0, बलरामपुर जनपद का क्षेत्रफल 2187 वर्ग किमी0, सिद्धार्थनगर जनपद का क्षेत्रफल 2172 वर्ग किमी0, महराजगंज जनपद का क्षेत्रफल 1982 वर्ग किमी0 तथा कुशीनगर जनपद का क्षेत्रफल 757 वर्ग किमी0 है।

समतल भूमि, अपेक्षाकृत मन्द, वर्षा की अधिकता, आदि इस क्षेत्र की प्रमुख विशेषताएं हैं। वर्षा की अधिकता के कारण यह क्षेत्र सर्वदा वनाच्छादित रहा है। नम जलवायु के कारण यहाँ पर मच्छरों, मक्खियों तथा अन्य भयंकर जीव जन्तुओं की प्रमुखता रही है। वर्तमान में इस क्षेत्र में जनघनत्व तेजी से बढ़ रहा है, क्योंकि रिक्त भू–भाग देश के विभिन्न क्षेत्रों से लोगो को यहाँ आने के लिए आकर्षित कर रहा है।

साहित्यावलोकन

भारत का न्यून निर्देशांक इतना चिंतनीय नहीं है, जितना भारत के अंतर्गत मानव विकास की दशा व स्तर में क्षेत्रीय विभिन्नता यदि उत्तर–प्रदेश की बात करें तो स्पष्ट होगा कि उत्तर–प्रदेश का मानव विकास स्तर राष्ट्रीय मानव विकास स्तर का मात्र एक तिहाई है अर्थात् यह सूचकांक मात्र 0.1 है। यदि इस सूचकांक को जीवन–शैली की स्वतंत्रता एवं अवसरों का विस्तार मानें तो उत्तर–प्रदेश में निश्चय ही ऐसे अवसर व उत्तम जीवन शैली की सुलभता नहीं है। उत्तर प्रदेश का एक बड़ा जनसमुदाय ग्रामीण है जो अभाव का जीवन जीने हेतु विवश है। इस दरिद्रता के दुष्चक्र में विकास की दौड़ में पीछे छूटे लोग गरीबी, शारीरिक दुर्बलता, शक्तिहीनता आदि के जाल में उलझे हुए हैं। इन सारी परिस्थितियों की एक मात्र जननी अनियंत्रित रूप से निरन्तर बढ़ती जा रही जनसंख्या है।

जनसंख्या के स्थानान्तरण से किसी भी देश की जनसंख्या का वितरण यौन संरचना, यौन अनुपात, साक्षरता एवं व्यावसायिक संरचना आदि प्रभावित होती है। जनसंख्या स्थानान्तरण का ही प्रतिफल है कि आज कोई भी क्षेत्र जनविहीन नहीं है। जनसंख्या के प्रभावी कारकों में आकर्षण एवं विकर्षण शक्तियों का प्रमुख योगदान होता है। आकर्षण की शक्तियों के अंतर्गत उपयुक्त कृषि–भूमि की उपलब्धता, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, आवास एवं सुरक्षा इत्यादि की सुव्यवस्था को तथा विकर्षक शक्तियों के अंतर्गत ग्रामीण, गरीबी, बेरोजगारी, आवास, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सुरक्षा आदि की दुर्व्यवस्था को सम्मिलित किया जाता है। विश्व के विकासशील राष्ट्रों में तीव्र जनसंख्या वृद्धि से विविध समस्याएं उत्पन्न हो गई है। जनसंख्या एवं प्राप्त संसाधनों का अनुपात प्रायः असंयमित होता जा रहा है तीव्र जनसंख्या वृद्धि से न केवल भोजन, शिक्षा एवं स्वास्थ्य की समस्या उत्पन्न हो रही है बल्कि संसाधनों के तीव्र दोहन के कारण उनका तीव्र गति से ह्रास भी होता जा रहा है। इस कारण से पारिस्थैतिकी असंतुलन की स्थिति बनती जा रही है। यही कारण है कि विश्व के समस्त राष्ट्र प्राकृतिक संसाधनों के सम्यक आकलन और विश्लेषण के उपरान्त समन्वित विकास हेतु जनसंख्या सम्बन्धी योजनाओं को कार्यान्वित कर रहे हैं ताकि जनसंख्या नियन्त्रण के साथ ही साथ प्राकृतिक संसाधनों और प्राकृतिक पर्यावरण से संतुलन स्थापित रहे। यह संतुलन की ही स्थिति जैव जगत को नष्ट होने से बचा सकती है।

विगत कुछ वर्षो में जनसंख्या का अध्ययन पर्यावरण एवं संविकास के संदर्भ में किया जाने लगा है। इस संदर्भ में एम0के0 तोल्वा, जी0बर्नाड एस0एन0 अग्रवाल, प्रो0 जगदीश सिंह विद्वानों का प्रयास महत्वपूर्ण है। मानव, पृथ्वी तथा पर्यावरण सम्बन्धी अध्ययनों को सीमाबद्ध कर पाना बेहद कठिन कार्य है। साहित्यों की समीक्षा से विदित होता है, कि तमाम लेखों में जहाँ संसाधनों के विस्तृत आयाम को प्रस्तुत किया गया है, वहीं कुछ विद्वानों ने समस्यामूलक एवं नीतिपरक व नियोजन से सम्बन्धित अध्ययन प्रस्तुत किया है। यदि मैनर के 'पर्यावरण का स्वरूप', रोब के 'वातावरण एवं मानव', साउथविक के परिस्थैतिकी और हमारे पर्यावरण की गुणवत्ता', आरविल के 'मानव और पर्यावरण' में पर्यावरण के विभिन्न घटकों का विश्लेषण करने के उपरान्त पर्यावरणीय अवक्रमण का अध्ययन किया जाता है। मैसन का 'पर्यावरणीय समस्याएं, सिद्धान्त व समालोचना', डारमैन का 'पर्यावरणीय नियोजन, प्रत्यक्षीकरण और संरक्षण', पार्क की पर्यावरणीय नीतियां : अंतर्राष्ट्रीय समीक्षा', खुश्र का भारत में पर्यावरणीय प्राथमिकताएं और संधृत विकास', डॉ0 जगदीश सिंह 'पापुलेशन, इन्वायर्नमेण्ट एण्ड इको डेवलपमेण्ट इन इस्टर्न यू0पी0, पावलॉव की इण्डियाः सोशल एण्ड इकोनोमिक डेवलेपमेण्ट (18वीं से 20वीं शदी), बैमेट की 'कल्चरल आस्पेक्ट्स एण्ड डेवलपमेण्ट, डॉ0 जगदीश सिंह की 'इन्वार्नमेण्ट इन ज्योग्राफीः रिस्ट्रोस्पेक्ट्स एण्ड प्रोस्पेक्ट्स,' माइकल सेल की 'ज्योग्राफी इज ए स्टडी ऑफ इन्वार्नमेण्ट', सैश की 'द स्ट्रेटजी ऑफ इको–डेवलेपमेण्ट', में पर्यावरण की नीतियों के साथ ही साथ उत्पन्न समस्याओं व उनके निराकरण की चर्चा की गयी। 1976 में प्रकाशित पीटर की पुस्तक 'डेमोग्राफी' में जनसंख्या दबाव तथा भूमि उपयोग का वर्णन देखने को मिलता है। ओ0एस0 श्रीवास्तव की 'ए टेस्ट बुक ऑफ डेमोग्राफी', थाम्पसन और डेबिस की 'जनसंख्या समस्या', आर0एम0 दूबे की 'उत्तर प्रदेश के विशेष संदर्भ में भारत की जनसंख्या गत्यात्मकता' जेलिंस्की की 'प्रोलॉग ऑफ पापुलेशन ज्योग्राफी', जी0एस0 घोसाल तथा ए0बी0 मुकर्जी की डिस्ट्रीयूशन एण्ड रिलेटिव कन्सट्रेक्शन ऑफ सिड्यूल कास्ट पापुलेशन इन इण्डिया', ए0बी0 मुखर्जी की 'द चमार्स ऑफ उत्तर प्रदेश' उल्लेखनीय है।

डॉ0 ओम प्रकाश शुक्ल द्वारा प्रस्तुत शोध प्रबन्ध 'लैण्ड यूज इन इकोडेवलेपमेण्ट पर्सपेक्टिव, ए केस स्टडी ऑफ देवरिया डिस्ट्रिक', डॉ0 हरिशंकर लाल की शोध प्रबन्ध 'भारत नेपाल तराई के पारिस्थैतिकी तन्त्र पर निर्वनीकरण का प्रभाव' भी इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रयास है। भारत में जनसंख्या भूगोल का अध्ययन गुरूदेव सिंह घोसाल के कार्य से प्रारम्भ होता है। जिससे प्रभावित होकर अनेक विद्वानों ने देश के विभिन्न क्षेत्रों की जनसंख्या का अध्ययन किया। के0एस0 अहमद ने सम्पूर्ण भारत के क्षेत्रों में जनसंख्या वितरण को प्रभावित करने वाले भौतिक एवं सांस्कृतिक कारकों का विश्लेषण किया। इसके अतिरिक्त सी0बी0 मामोरिया, एस0एन0 अग्रवाल, गोपालकृष्णन, ओमप्रकाश, सात्वना घोष, आर0सी0 शर्मा, पी0जे0 भट्टाचार्या जी, हंसराज, ए0 भट्टाचार्या जी, रामबली सिंह, ए0बी0 मुखर्जी, आर0सी0 चांदना व एम0एस0 सिद्धू, आर0पी0 गुप्ता, गोरखराय, डी0एन0सिंह, हीरालाल यादव का योगदान प्रमुख है। जनसंख्या भूगोल में कल्याण परक

उपागम, गुणात्मक जीवन स्तर सम्बन्धित अध्ययनों का महत्व बढ़ा है। साक्षरता सामान्य रूप से जनसंख्या के स्वरूप निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अतः शिक्षा तथा उसके उपागमों का अध्ययन भी अपरिहार्य हो जाता है। इसी संदर्भ में फ्राइडमैन ने शिक्षा को आधार मानकर विकासशील देशों में प्रादेशिक नियोजन की बात कहा है। गोरखपुर विश्वविद्यालय में भी जनसंख्या तथा साक्षरता के अंतर्सम्बन्धों पर उल्लेखनीय कार्य हुए हैं। जिसमें दिनेश राय, मधु यादव, गीता श्रीवास्तव, कुसुम सिंह का योगदान प्रमुख है।

डी0पी0 मिश्र ने देवरिया जनपद के संदर्भ में अपना शोध प्रबन्ध 'साक्षरता का स्तर एवं जीवन की गुणवत्ता में इनके मध्य अंतर्सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास किया है। शैक्षिक विकास एवं प्रसार में मात्रात्मक एवं गुणात्मक सुधार से सम्बन्धित कार्यक्रम राष्ट्रीय विकास एवं नियोजन के महत्वपूर्ण अंग हैं तथा प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से समग्र विकास की प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं। शैक्षिक विकास स्तर सामान्यतः आर्थिक विकास स्तर का परिचायक होता है। यद्यपि साक्षरता दर किसी भी समाज विशेष के शैक्षिक विकास स्तर के आकलन का महत्वपूर्ण मापदण्ड होता है तथापि इसके द्वारा शिक्षा की सामाजिक प्रासांगिकता का बोध नहीं होता है मानव समाज गत्यात्मक होता है।

इसी संदर्भ में सतीश कुमार यादव 2010 के प्रस्तुत शोध प्रबन्ध ''वाराणसी जनपद में जनसंख्या गत्यात्यात्मकता का भौगोलिक अध्ययन'' में जनसंख्या के विविध पक्षों के सम्यक अध्ययन को स्पष्ट किया गया है। वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर में जनसंख्या भूगोल पर अनेक शोधकार्य हुए है। जिसमें आनन्द कुमार सोनकर 2011 के प्रस्तुत शोध प्रबन्ध ''आजमगढ़ जनपद में जनसंख्या वृद्धि एवं पर्यावरण अवक्रमणः एक भौगोलिक अध्ययन'' में जनसंख्या वृद्धि के साथ–साथ प्राकृतिक संसाधनों की उपयोगिता एवं पारिस्थैतिकी संतुलन पर प्रकाश डाला गया है। प्राकृतिक संसाधनों की उपयोगिता तभी सुनिश्चित होती है जब मनुष्य उसके सम्पर्क में आता है, किसी भी वस्तु या साधन की उपयोगिता वृद्धि में उसका समुचित प्रयोग महत्वपूर्ण होता है। इस प्रकार विकास के लिए मानव एवं प्राकृतिक पर्यावरण में संतुलन होना अतिआवश्यक है। इनके अतिरिक्त मदन मोहन श्रीवास्तव 2012 के ''तहसील बूढ़नपुर का समन्वित ग्रामीण विकास अध्ययन'' एवं चन्द्रजीत यादव 2014 के ''इलाहाबाद जनपद में जनसंख्या का स्थानिक प्रतिरूप'' में जनसंख्या की सामाजिक आर्थिक स्थिति, जनसंख्या घनत्व, शैक्षिक स्तर, स्वास्थ्य, आवास परिवहन, आदि क्षेत्रों पर अध्ययन किया गया है।

मुख्य अध्ययनः

अध्ययन क्षेत्र में 6 जनपदों के 32 विकासखण्डों में जनसंख्या का वितरण असमान है अध्ययन क्षेत्र की 6858142 जनसंख्या उसके सभी भागों में समान रूप से वितरित नहीं है। अध्ययन क्षेत्र के किसी विकासखण्ड में जनसंख्या का सघन बसाव है तो कहीं जनसंख्या कम है। जनसंख्या वितरण से मानव धरातल पर स्थिति जन्य प्रारूप का बोध होता है। अध्ययन क्षेत्र सरयूपार मैदान (उत्तर–प्रदेश) का तराई क्षेत्र का चयन किया गया है, जो विषम जलवायु वाला क्षेत्र है। विषम जलवायु के बावजूद यहाँ मानव निवास कर अपने जीविकोपार्जन के लिए व्यवसायिक कृषि, मत्स्यपालन, कुक्कुट पालन आदि कार्य करते हैं जिससे ये स्वयं को समृद्ध रूप में लाने का प्रयास कर रहे हैं शिक्षा में सुधार से ये सरकारी सेवाएं भी दे रहे हैं।

सारणी संख्या 1

सरयूपार मैदान (उत्तर प्रदेश) के तराई क्षेत्र में विकासखण्डवार आर्थिक जनसंख्या वर्ष 2011

क्र. सं.	जनपद	विकास खण्ड	कृषक	कृषि श्रमिक	पारिवारिक	अन्य कर्मकर	कुल मुख्य कर्मकर	सीमान्त कर्मकर	कुल कर्मकर
1.	बहराइच	मिहिपुरवा	38486	32304	1672	10556	83018	54603	137621
2.		नवाबगंज	15606	11357	1042	6612	34617	28721	63338
3.	श्रावस्ती	जमुनहा	28528	12651	1341	4508	47028	38807	85835
4.		हरिहरपुररानी	22730	12640	1764	5862	42996	28554	71550
5.		सिरसिया	23871	13402	1409	4900	43582	41096	84678
6.	बलरामपुर	हरैया सतघरवां	28515	21167	1614	6419	57715	448501	102566
7.		तुलसीपुर	28768	19022	2392	5898	56080	32287	88367
8.		गैसड़ी	30415	20851	2458	5900	59624	36664	96288
9.		पचफेडवा	22070	19136	1489	6111	48806	38963	87769
10.		बलरामपुर	30591	22531	1957	12340	67419	40607	108026
11.	सिद्धार्थनगर	इटवा	19317	9908	1043	4257	34525	37795	72656
12.		भनवापुर	18123	9982	1639	5117	34861	37795	72656
13.		खुनियांव	19851	11324	1200	4693	37068	31023	68091
14.		बढ़नी	12637	10179	935	5245	28996	25935	54931
15.		बर्डपुर	15958	10868	1041	4248	32115	28378	60493
16.		नौगढ़	13498	9961	1376	8368	33203	26992	60195
17.		जोगिया	11731	8465	966	3311	24473	30228	54701

18.		उसका बाजार	6518	4881	786	3989	16174	21891	38065
19.		बांसी	14656	10162	946	3900	29664	26694	56358
20.		शोहरतगढ़	11449	8785	648	4609	25491	21934	47425
21.		नौतनवा	13289	12081	1666	10009	37045	53749	90794
22.		लक्ष्मीपुर	16204	15244	1626	7647	40721	40432	81153
23.		वृजमनगंज	14154	10725	910	6117	31906	38015	69921
24.		फरेन्दा	13073	11402	1313	11007	36795	31038	6783
25.	महाराजगंज	निचलौल	14908	18991	1079	6566	41544	49872	91416
26.		मिठौरा	9203	13130	1479	7986	31798	67904	99702
27.		महाराजगंज	9177	11572	1397	6128	28274	60757	89031
28.		घुघली	10277	9765	1498	7565	29105	39823	68928
29.		सिसवां	13343	16351	2027	8298	40019	46644	86663
30.		खड्डा	10238	16198	1076	6841	34353	52521	86874
31.	कुशीनगर	नेबुआ नौरंगिया	12388	14951	1160	5418	33917	36385	70302
32.		बिशुनपुरा	11769	16257	1486	8671	38183	41695	79878
योग			561341	446243	44435	209096	1261115	1636303	2433054

प्रस्तुत सारणी में अध्ययन क्षेत्र की आर्थिक जनसंख्या का वितरण दिखाया गया है। इसमें तराई क्षेत्र के विकासखण्डों में निवास करने वाले कृषकों की संख्या, श्रमिकों की संख्या, सीमान्त कर्मकारों की संख्या, मुख्य कर्मकारों की संख्या आदि को दर्शाया गया है। तराई क्षेत्र में स्थित विकासखण्डों में कृषकों की संख्या बहराइच जनपद के मिहिपुरवा विकासखण्ड में सर्वाधिक है। इस विकासखण्ड में 38486 कृषक निवास करते हैं। कृषि श्रमिक के क्षेत्र में भी यह विकासखण्ड अग्रणी है। यहाँ 32304 कृषि श्रमिक हैं। अध्ययन क्षेत्र में कुल कर्मकारों की दृष्टि से मिहिपुरवा विकासखण्ड ही शीर्ष पर है। यहाँ वर्ष 2011 में 137621 कर्मकर निवास करते हैं। जबकि इसी वर्ष सिद्धार्थनगर जनपद में स्थित उसका बाजार विकासखण्ड में 38065 कर्मकर निवास करते थे इसके साथ ही यह विकासखण्ड इस क्षेत्र में सबसे निचले स्थान पर है।

जनसंख्या घनत्व द्वारा किसी क्षेत्र के संसाधनों पर जनसंख्या दबाव को महसूस किया जाता है। जनसंख्या घनत्व का उद्देश्य जनसंख्या संसाधनों के सम्बन्धों को स्पष्ट करता है। जनसंख्या घनत्व किसी प्रदेश के क्षेत्रफल तथा उसके जनसंख्या के पारस्परिक अनुपात को कहते हैं।

जनसंख्या का घनत्व वहाँ के प्राकृतिक संसाधनों और आर्थिक विकास की अवस्था पर निर्भर करता है। जनसंख्या घनत्व को प्रति वर्ग किमी0 में व्यक्त किया जाता है। जनसंख्या को अंश तथा क्षेत्रफल को हर के रूप में प्रयोग किया जाता है। भूगोलवेत्ताओं ने अंश और हर के माध्यम से अनेकों प्रकार के जनसंख्या घनत्व का विकास किया है। जिसका अपना हर क्षेत्र में महत्व है, लेकिन सभी भूगोलवेत्ताओं का एक ही मुख्य उद्देश्य जनसंख्या और संसाधनों के बीच सम्बन्धों को स्पष्ट करना है।

जनसंख्या घनत्व को निम्नलिखित भागों में विभक्त किया जा सकता है।

1. गणितीय घनत्व (सामान्य घनत्व)
2. कृषि घनत्व
3. कायिक घनत्व
4. पौष्टिक घनत्व
5. आर्थिक घनत्व
6. तुलनात्मक घनत्व
7. ग्रामीण घनत्व
8. नगरीय घनत्व
9. अधिवास घनत्व
10. प्रक्षेपित घनत्व

उपरोक्त सभी घनत्व में से गणितीय अथवा सामान्य घनत्व सर्वाधिक प्रचलित है, जिसका सभी भूगोलविद्, जनांकिकीय एवं सामाजिक वैज्ञानिकों ने अपने अध्ययनों में प्रयोग किया है।

गणितीय घनत्वः

किसी भी प्रदेश के कुल क्षेत्रफल का उस प्रदेश की कुल जनसंख्या के सामुदायिक सम्बन्ध को गणितीय घनत्व कहते हैं। गणितीय घनत्व मानव तथा क्षेत्र के पारस्परिक सम्बन्धों को व्यक्त करने का एक सरल तरीका है क्योंकि; इससे क्षेत्र विशेष की वास्तविक दशा और जनसंख्या की आर्थिक स्थितियों का पता नहीं चल पाता है जैसे यदि किसी क्षेत्र का कोई भाग सघन बसा है और शेष भाग जन शून्य है तो ऐसी स्थिति में घनत्व की वास्तविकता स्पष्ट नहीं हो पाती है फिर भी यह सर्वाधिक प्रचलित विधि है क्योंकि; यह छोटी प्रशासनीय इकाइयों के लिए अधिक उपयुक्त होती है।

इसे निम्नलिखित सूत्र द्वारा ज्ञात किया जाता है।

$$\text{गणितीय घनत्व} = \frac{\text{कुल जनसंख्या}}{\text{कुल क्षेत्रफल}}$$

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-6* February- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

सारणी संख्या 2

सरयूपार मैदान (उत्तर प्रदेश) के तराई क्षेत्र में विकासखण्डवार जनसंख्या घनत्व (प्रति व्यक्ति वर्ग किमी0 में) वर्ष 2011

क्र. सं.	जनपद	विकास खण्ड	कुल जनसंख्या	कुल क्षेत्रफल (वर्ग किमी0 में)	जनसंख्या घनत्व
1.	बहराइच	मिहिपुरवा	376776	595.47	633
2.		नवाबगंज	180099	244.21	737
3.	श्रावस्ती	जमुनहा	238857	362.41	659
4.		हरिहरपुररानी	198480	362.06	548
5.		सिरसिया	220348	527.57	418
6.	बलरामपुर	हरैया सतघरवां	268465	599.23	448
7.		तुलसीपुर	265435	471.76	563
8.		गैसड़ी	247865	545.00	455
9.		पचफेडवा	218553	479.84	456
10.		बलरामपुर	311389	446.23	698
11.	सिद्धार्थनगर	इटवा	183589	281.24	653
12.		भनवापुर	211290	306.75	689
13.		खुनियांव	214464	285.07	752
14.		बढ़नी	145269	186.16	780
15.		बर्डपुर	164892	162.49	1015
16.		नौगढ़	170255	139.62	1219
17.		जोगिया	132945	205.37	647
18.		उसका बाजार	107576	130.20	826
19.		बांसी	152352	191.89	794
20.		शोहरतगढ़	133110	210.69	632
21.	महाराजगंज	नौतनवा	245569	245.15	1002
22.		लक्ष्मीपुर	225437	317.86	709
23.		वृजमनगंज	211954	246.59	860
24.		फरेन्दा	182805	183.51	996
25.		निचलौल	255757	358.76	713
26.		मिठौरा	246057	287.65	1185
27.		महाराजगंज	219763	240.96	912
28.		घुघली	188952	205.80	918
29.		सिसवां	228147	232.47	981
30.	कुशीनगर	खड्डा	246445	307.39	801
31.		नेबुआ नौरंगिया	223759	198.34	1128
32.		बिशुनपुरा	252760	217.85	1160
योग			6869414	9775.59	703

अध्ययन क्षेत्र के जनसंख्या घनत्व प्रतिरूप का अध्ययन करने के लिए इसे जनसंख्या घनत्व के आधार पर तीन भागों में विभक्त किया गया है।

1. उच्च जनसंख्या घनत्व के क्षेत्र (1000 से अधिक)
2. मध्यम जनसंख्या घनत्व के क्षेत्र (700 से 1000)
3. निम्न जनसंख्या घनत्व के क्षेत्र (700 से कम)

उच्च जनसंख्या घनत्व के क्षेत्र (1000 से अधिक)

इसके अंतर्गत अध्ययन क्षेत्र के उन विकासखण्डों को सम्मिलित किया गया है जिनका घनत्व 1000 से अधिक है। ये विकासखण्ड–बर्डपुर (1015), नौगढ़ (1219), नौतनवा (1002), मिठौरा (1185), नेबुआ नौरंगिया (1128) तथा विशुनपुरा (1160) है। इनमें सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व नौगढ़ (1219) विकासखण्ड का है जो सिद्धार्थनगर जनपद में स्थित है। इस क्षेत्र के अंतर्गत विकासखण्ड सम्मिलित है।

मध्यम जनसंख्या घनत्व के क्षेत्र (700 से 1000)

इसके अंतर्गत अध्ययन क्षेत्र के उन विकासखण्डों को सम्मिलित किया गया है; जिनका जनसंख्या घनत्व 1000 से कम तथा 700 से अधिक है। इनमें नवाबगंज (737), खुनियांव (752), बढ़नी (780), उसका बाजार (826), बांसी (794), लक्ष्मीपुर (709) बृजमनगंज (860), फरेन्दा (996), निचलौल (713), महाराजगंज (912), घुघली (918), सिसवां (981), खड्डा (801) विकासखण्ड सम्मिलित हैं। इन विकासखण्डों की संख्या 13 है।

निम्न जनसंख्या घनत्व के क्षेत्र (700 से कम)

इसके अन्तर्गत 13 विकासखण्ड सम्मिलित है जिनकी जनसंख्या घनत्व 700 से कम है। इनमें मिहिपुरवा (633), जमुनहा (659), हरिहरपुररानी (548) सिरसिया (418), हरैया सतघरवां (448), तुलसीपुर (553), मैसड़ी (455), पचफेड़वा (456), बलरामपुर (698), इटवा (653), भनवापुर (689), जोगिया (647) तथा शोहरतगढ़ (632) विकासखण्ड आते हैं। सबसे कम जनसंख्या घनत्व सिरसिया (418) विकासखण्ड का है। महराजगंज तथा कुशीनगर जनपद का कोई भी विकासखण्ड इसमें शामिल नहीं है। अध्ययन क्षेत्र का औसत जनसंख्या घनत्व 677 है।

निष्कर्ष

किसी भी क्षेत्र में जनसंख्या का घनत्व उस क्षेत्र में विद्यमान आर्थिक गतिविधियों के प्रकार और पैमाने से अत्यधिक प्रभावित होता है। किसी भी क्षेत्र में जनसंख्या का घनत्व उस क्षेत्र में विद्यमान आर्थिक गतिविधियों प्रौद्योगिकी और आर्थिक विकास सामान्यतः जनसंख्या के वितरण और घनत्व में होने वाले परिवर्तनों के साथ घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित है। एक अर्थव्यवस्था विशेष के अन्तर्गत एक विशिष्ट तरह का जनसंख्या वितरण प्रारूप विकसित होता है। इस तथ्य की पुष्टि कृषि अर्थव्यवस्था और औद्योगिक अर्थव्यवस्था वाले क्षेत्रों में जनसंख्या के वितरण एवं घनत्व में पायी जाने वाली भिन्नता से स्पष्ट हो जाती है, में जनसंख्या का वितरण अधिक फैलाव लिए हुए है।

विश्व में ऐसे कई उदाहरण है जो पहले सम्पन्न और सघन बसे हुए थे। लेकिन आज वहां जनसंख्या का वितरण छितराया हुआ मिलता है। ऐसे क्षेत्रों में उत्तरी अफ्रीका, मेसोपोटामिया, यूकाटन प्रायद्वीप और पूर्वी श्रीलंका उल्लेखनीय है। राजनीतिक व्यवस्था एवं नियमों का जनसंख्या के वितरण पर प्रत्यक्षतः प्रभाव पड़ता है। भारत सरकार की उदार नीति ने पड़ोसी देशों से यहां आकर बसने वाले शरणार्थियों को स्थायी रूप से बसने में मदद की है, जिसके कारण देश के सीमान्त राज्यों में जनसंख्या के वितरण में सघनता आयी है। अफ्रीका के सोमालिया, इथियोपिया तथा एशिया में अफगानिस्तान में राजनीतिक अस्थिरता ने जनसंख्या के बसाव को प्रोत्साहित किया है। अध्ययन क्षेत्र से स्पष्ट है कि प्राकृतिक संसाधनों की उपयोगिता तभी सुनिश्चित होती है जब मनुष्य उसके सम्पर्क में आता है। किसी भी वस्तु या साधन की उपयोगिता वृद्धि में उसका समुचित प्रयोग महत्वपूर्ण होता है। इस प्रकार भूगोल मानव एवं उसकी संख्या केन्द्रीय तत्व है। क्षेत्र विशेष की जनसंख्या की सामाजिक–आर्थिक स्थिति, जनसंख्या घनत्व, शैक्षिक स्तर आदि ऐसे तत्व हैं जो जनसंख्या की संसाधनता को प्रभावित किये हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

Singhal, R., (1989) "Gandak Canal And irrigation Department, U.P., Faizabad, Voll.-10

Singh, R.L., &

Singh, K.N., (1971) "Middle Ganga Plain", In Singh, R.L., et.al.(eds.), India, 'A Regional Study', NGSI, Varansi

Srivastava, V.S.L. (1991) "Geographical Setting And Strategic Impartance of Nepal And Sikkim With Special Reference To the National Security of India", An Unpublished Ph.D. Thesis, Department of Defence Studies, University of Gorakhpur,

Singh, R.B., (1975) "Rajput Clan Settlement In Varanasi District", N.J.G.I., Varanasi,

Shahi, S.S., (1994) "Encyclopeadia of Indian Tribes", Anmol Publication, Delhi.

Sharma, R.C. (1975) "Population Trends, Resources And Environmental Handbook On Population", Dhanpat Rai & Sons, Delhi.

हीरा लाल (1990) ''जनसंख्या भूगोल'', वसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर।

यादव, हरीराम (1997) ''सरयूपार के नगरों में फुटकर व्यवसाय'', अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, भूगोल विभाग, दी0द0उ0 गोरखपुर। विश्वविद्यालय गोरखपुर